© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा एवं डॉ० ऐनीबेसेन्ट

डॉ० मृत्युंजय नारायण लोकेश
एम.ए., पीएच.डी.
इतिहास, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर।

डॉ० ऐनीबेसेन्ट उन महान विभूतियों में स्थान रखती हैं जिन्होंने भारत के स्वर्णिम भविष्य की कल्पना की एवं स्वाधीन भारत के गौरवमय रूप की स्थापनार्थ प्रयास किये। यदि तिलक ने 'शिवजी' और 'गणेश' उत्सवों द्वारा राजनीतिक जागरण एवं हिन्दू संस्कृति के उज्जीवन के कार्य आरंभ किये तथा 'स्वदेशी' और 'स्वराज्य' का गुरूमंत्र दिया, गाँधी ने चरखा चलाकर स्वावलम्बन की शिक्षा दी, सुप्त आत्माभिमान और बिखरते आत्म विश्वास को अहिंसा, असहयोग के शस्त्रों से सुसज्जित कर जनमानस को जाग्रत किया, उसी तरह डॉ० ऐनीबेसेन्ट ने भी भारत भारतीयता के उत्थान के निमित भारत के गौरवपूर्ण अतीत को अपना साधन बनाया और भारतीय व्यवस्थाओं के उज्जीवन तथा पुर्नस्थापनार्थ कार्य किये। वे अपने प्रयासों द्वारा भारत को विश्व शक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में अग्रसर हुई तथा उन्होंने उद्घोष किया कि, ''भारत का उन्नयन उसके धर्म में निहित है, धर्म भारत की आत्मा है।'' उनका कथन था कि हमें पुरातन की उपेक्षा नहीं करनी है वरन् उसे वर्तमान के अनुरूप स्थापित और उज्जीवित करना है। भारतीय संस्कृति की प्राचीनता को बाताते हुये, उन्होंने उसके चिरन्तन स्वरूप पर प्रकाश डाला और यह स्पष्ट किया कि भारत और भारतीय संस्कृति आज भी सजीव है, इसका मूल कारण उसकी सृजनात्मकता है। छान्दोग्य उपनिषद् को उद्धृत करते हुए कहा कि–

"Man is created by thought, and what a man thinks upon that he becomes therefore think upon Brahman……"

अर्थात् भारत की चिरन्तनता का कारण उसकी आध्यात्मिकता है, ब्रह्म संबंधी उसकी विचारशीलता एवं सृजनात्मकता है, वही उसका मूल आधार प्राणों की संजीवनी है जो उसे आज भी प्रासंगिक और महत्वपूर्ण बनाये हुये है।

डॉ० ऐनीबेसेन्ट भारत में स्थापित एवं प्रचारित अंग्रेजी की भौतिक शिक्षा व्यवस्था की विरोधी थीं क्योंकि ब्रिटिश शासकों की शिक्षा नीति भारतीयों को उनके अपने अध्यात्म तथा दर्शन से विपरीत दिशा में ले जाने का कार्य कर रही थी[1]–

"She found young Indians given only a purely secular education by the Government, which was leading them from their own deep philosophy and culture into agnosticism and materialism."

डॉ० बेसेन्ट का लक्ष्य भारतीयता की सुरक्षा करना तथा पाश्चात्य भौतिकवादी प्रहारों का प्रतिरोध करना था। वे भारतीय संस्कृति से प्रभावित थीं तथा उसके उज्जीवन के प्रति पूर्णतः समर्पित। उनका विचार था कि भारतीय अपनी गौरवमयी परम्पराओं से अनभिज्ञ हैं, जिस कारण वे पाश्चात्य का अनुकरण रह रहे हैं, जबकि वास्तविकता है कि भारतीय धर्म दर्शन एवं संस्कृति संपूर्ण विश्व के लिए अनुकरणीय है। उनका उद्देश्य भारतीय व्यवस्थाओं के उज्जीवन के साथ भारत को विश्व शक्ति का राष्ट्र बनाना था। उनका कथन था कि[2]–

"Indian is the key note, India is the centre of that greatstorm which shall usher in a Splended Peace.."

भारतीय राष्ट्रीयता को समाप्त करने की ओर अग्रसर अंग्रेजी शिक्षा तथा पाश्चात्यकरण पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि ब्रिटिश नीति के फलतः शिक्षित भारतीय युवा वर्ग स्वयं अपनी मातृभाषा से अनभिज्ञ, अंग्रेजी के ज्ञाता एवं उसी संस्कृति का अनुकरण कर रहे हैं। किसी भी राष्ट्र पर अपनी भाषा, संस्कृति और कानून व्यवस्था को लागू करना तथा उस देश की भाषा संस्कृति तथा कानून व्यवस्थाओं को समाप्त करना है। इसी संदर्भ में उन्होंने कहा कि[3]–

When Lord Macaulay urged Englsh education, he was looking down with contempt on the great literature of India…. Boys were brought up without any knowledge of the classics of their country. They could declaim English, but not in their mother tongue,… there is no subtler way of

denationalizing a country, that to make the language of the upper classes a foreign tongue, and to require a knowledge of foreign tongue for Government services."

ब्रिटिश शिक्षा नीति के कारण उत्पन्न विषमताओं को समाप्त करने और परिस्थितियों में परिवर्तन एवं सुधार की आवश्यकता अनुभव कर डॉ० बेसेन्ट ने किया तथा भारतीय सिद्धांतों का मनन चिंतन तथा प्रसार इसके साथ ही भारत का गौरवपूर्ण शिक्षा व्यवस्था से प्रेरणा लेकर नवीन परिवेश की आवश्यकतानुसार राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था को स्थापित करना।

डॉ० बेसेन्ट का कथन था कि धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों पर आधारित शिक्षा की कोई भी व्यवस्था लाभदायक तथा राष्ट्र निर्माण में सहायक नहीं हो सकती। शिक्षा का धर्म पर आधारित होना राष्ट्र के समग्र विकास तथा राष्ट्रीयता के लिए अनिवार्य है, धर्म चाहे जो हो हिन्दू, इस्लाम या ईसाई, किंतु धर्म आधारित नैतिक शिक्षा नीति का आधार बनाना अत्यंत आवश्यक है[4]–

"No secular education will ever bear good fruits, unless it rests upon a religious basis…. Be that basis Hindu, Mohammaden or Christian."

इसी धार्मिक, नैतिक शिक्षा के सिद्धांत को और भी स्पष्ट करते हुये डॉ० बेसेन्ट ने कहा कि–

"The condition of National Greatness is the teaching of religion to the young. Teach them to be religious without being sectarian, teach them to be devoted without being fanatical, teach them to love their own faith without being decrying or hating the faith of their fellow citizens….."

इस प्रकार डॉ० बेसेन्ट ने इस तथ्य को स्पष्ट किया कि नाना धर्मों एवं संस्कृतियों के संगम स्थल में सही अर्थों में सर्वधर्म सम्भाव तथा सिक्युलरइज्म का विकास एवं स्थापना तभी संभव है जब भारतीय शिक्षा व्यवस्था का आधार धर्म आधारित नैतिक शिक्षा हो क्योंकि विभिन्न पंथ, सम्प्रदाय धर्म सभी में प्रतिपादित ईश्वर एक हैं। वह प्रेम का सर्वोच्चतम् पुंजीभूत रूप है[5]–

"I'svara is love, and wills happiness of his universe……..."

इस प्रकार डॉ० बेसेन्ट के अनुसार शिक्षा का धर्म से शोभित होना अनिवार्य था।

अपने राष्ट्रीय शिक्षा दर्शन के संदर्भ में उन्होंने स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय का तात्पर्य उस प्रणाली से है जो भारत की अपनी प्रणाली है[6]–

"To make Indian ideals the basis of Indian Civilization, renouncing the hybrid and sterile ideals of anaglicized Indianism……"

इसी प्रकार राष्ट्रीय को और भी स्पष्ट किया एवं कहा कि[7]–

"By National education I mean an education which is under national control… and which is directed with the sole eye to…. The intellectual and spiritual welfare of the Nation."

इस प्रकार डॉ० बेसेन्ट ने भारत में राष्ट्रीय शिक्षा के लिए एक आंदोलन आंरभ किया जिससे राष्ट्रीयता, आत्माभिमान, स्वाबलंबन, समानता और सद्भाव की स्थापना की जा सके। इस आंदोलन का सूत्रपात 1898 में वाराणसी से सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज और स्कूल की स्थापना के रूप में किया गया[8]–

"The movement for national education was teaching patriotism and pride of race and country.. The founding of Central Hindu College and School in 1898 in which, Hindu and English men work…in through equality the religion became an integral part of the training of patriotic youth."

सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना के माध्यम से जिस शैक्षणिक आंदोलन का आरंभ डॉ० बेसेन्ट द्वारा किया गया उसमें धर्म आधारित नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग थी। इस संदर्भ में डॉ० बेसेन्ट का तर्क था कि उनका उद्देश्य इस आंदोलन के माध्यम से भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था तथा उसके सिद्धांतों को, नवीन परिवेश में उज्जीवित कर, स्थापित करना है जिससे भारत सही अर्थों में अपनी राष्ट्रीय व्यवस्था तथा उसके सिद्धांतों को, नवीन परिवेश में उज्जीवित कर, स्थापित करना है जिससे भारत सही अर्थों में अपनी राष्ट्रीय व्यवस्थाओं का पुनर्गठन कर सके और सही अर्थों में भारत की युवा पीढ़ी को प्रांतीय प्राच्य के समन्वय के आधार पर, सर्वधर्म सम्भाव सहित आधुनिकतम शिक्षा प्रदान की जा सके, उनका कथन था कि–

''हिन्दू धर्म विहीन भारत का कोई भविष्य नहीं, धर्म ही वह धरती है जिसमें भारत की जड़े गहरी धंसी हुई है और यहाँ से उखाड़ने पर वह अनिवार्य रूप से स्वतः ही मुरझा जायेगी। धर्म से संबंध विच्छेद भारत को एक स्मृति चिन्ह में परिवर्तित कर देगा, वह इतिहासकारों, पुरातत्ववेत्ताओं की रूचि का विषय रह जायेगा, वह चीर फाड़ के लिये एक शिव के समान होगा, राष्ट्र प्रेम का लक्ष्य नहीं रहेगा न ही राष्ट्र रहेगा। अतः भारतीय शिक्षा व्यवस्था का धर्म आधारित

होना आवश्यक है जिससे अनेकता में एकता की स्थापना तथा राष्ट्रीयता को विकसित एवं स्थापित किया जा सके।''

अपनी शिक्षा योजना को स्पष्ट करते हुए डॉ० बेसेन्ट ने कहा कि वह विशुद्ध रूप से प्राचीन भारतीय सिद्धांतों पर आधारित है, इस कॉलेज की स्थापना में तथा संचालन में उन समस्त प्रबुद्ध भारतीयों का सहयोग एवं समर्थन है जो भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था एवं उसके सिद्धांतों का उज्जीवन एवं पुर्नस्थापना के इच्छुक एवं उसके लिए प्रयासशील है[9]–

"This very college is the work of those who are vowed to the restoration of the ancient type of education, of that four fold training of the nature which alone can built up the India of future…."

चार प्रकार की शिक्षा का तात्पर्य उस शिक्षा से था जिसमें बौद्धिक, शारीरिक, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा का समावेश हो, जो मात्रा अक्षर ज्ञान देने वाली शिक्षा न थी वरन् संस्कारों की जननी एवं निर्माता थी जो शिक्षा मोक्षकारक थी आर्थात् विद्यामुक्ति का कारक है, 'सा विद्या विमुक्तेय'। इस कारण आश्रम व्यवस्था के वैज्ञानिक आधार पर कार्य करने वालों के लिए ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है तभी स्वस्थ स्वच्छ मन मस्तिष्क एवं शरीर से उच्च शिक्षा की प्राप्ति संभव है।

भारतीय शिक्षा दर्शन एवं व्यवस्था के संदर्भ में डॉ० बेसेन्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि इंगलैंड के समस्त स्कूलों एवं विश्वविद्यालयों में इसी प्रकार शिक्षा दी जाती है किंतु यह दुःखद है कि भारत के संबंध में ब्रिटिश सरकार इसकी विरोधी है और यहाँ धर्म एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा को धर्म निरपेक्षता एवं तटस्थ नीति के नाम पर निष्कासित कर दिया गया है। जो हर प्रकार से भारत के लिए विनाशकारी है। भारतीयता का उत्कर्ष तभी संभव है जब शिक्षा चार प्रकार की हो, भारत की व्यवस्था के वैज्ञानिक विभाजन पर आधारित हो, उसमें प्रतीच–प्राच्य का संगम एवं समन्वय हो तथा विशुद्ध भारतीय शैक्षणिक सिद्धांतों पर आधारित हो जिसके द्वारा भारत की आत्मा रक्षित हो सके और भारत का सर्वांगीण विकास हो सके।

शिक्षा एक ऐसा प्रबल अस्त्र है, जिसके माध्यम से राष्ट्र अपने लक्ष्य एवं उद्देश्यों की प्राप्ति करता है, अतः उसका आध्यात्मिकता से युक्त होना आवश्यक है[10], क्योंकि

"It must have spiritually expressed in many graded religion, suitable for every class in the nation, if there are several religion, they must be friends…. acknowledging their common origin and their common aim, the uplifting of the Nation."

अतः शिक्षा का लक्ष्य राष्ट्रीय जीवन के लिए आवश्यक अनुशासन, त्याग, सादगी, सदाचार, कर्मठता आदि का बीजारोपण एवं उनका विकास करना है। इसके लिए आवश्यक है कि समस्त मत मतान्तरों के अनुकूल धर्म शिक्षा पाठ्यक्रम का अविभाज्य अंग हो। धर्म संगठन का आधार है, यह वह प्रमुख तत्व है, जो साम्प्रदायिकता और धर्मान्धता की समाप्ति कर सद्भाव सौहार्द एवं राष्ट्रीयता का विकास करता है। शिक्षा का लक्ष्य है[11]–

"The work of education, to liberate to realize the divine within, what we call man's higher nature…… the unfolding of hidden God within."

इस प्रकार डॉ० बेसेन्ट ने सर्वकालिक योजना बनाई तथा स्पष्ट किया कि हिन्दू धर्म को किसी सम्प्रदाय एवं पंथ की सीमा में आबद्ध नहीं किया जा सकता वह उदात्त, व्यापक और सर्वव्यापी है, केवल उपासना, पूजापाठ कर्मकांड की विधि मात्र नहीं वरन् जीवन की आस्था एवं विद्या है, जीवन की शैली है तथा भारत एवं भारतीयता की आधारशिला है। वह एक सुदृढ़ मेखला है जिसके द्वारा समस्त मत–मतांतर एवं विभिन्न वर्ग एक सूत्र में बांधे गये हैं, जो विभिन्नता में एक एकता का प्रतीक रूप है। हिन्दू धर्म जितना सहज, सरल, अपने में परिपक्व एवं परिपूर्ण है उतना अन्य कोई धर्म नहीं। वह बौद्धिक चिंतन एवं विचारों की अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करता है। उसमें निहित विचार स्वातंत्रय एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, उसके सम्भाव प्रकट करता है जिससे स्पष्ट है कि वह सांप्रदायिकता से परे है[12]–

"Hinduism, beyond all other faiths, has encouraged intellectual effort, intellectual research and intellectual freedom. The only authority recognized by it is the authority of wisdom."

शिक्षा में संस्कार, सद्भाव, नैतिकता की शिक्षा का होना अनिवार्य है। नैतिकता एवं संस्कारों का निर्माण धर्म की सहज सुबोध सार्वजनिक शिक्षा द्वारा ही संभव है क्योंकि[13]–

"…….. Religion alone teaches us that we are all one, that we are the part of single whole, and without this fact of unity, there is no sure foundation for morality."

इन समस्त स्थितियों का निराकरण इस तथ्य में निहित है कि, पराधीनता के समय तो हमने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये भारत की राष्ट्रीय व्यवस्था एवं राष्ट्रीय शिक्षा के स्वरूप पर पर्याप्त विचार मंथन किया, किंतु स्वतंत्रता के बाद हमारी राष्ट्रीयता की आवश्यकता गौण हो गई जिसका परिणाम था कि हम सर्वधर्म सम्भाव के विचार एवं सिद्धांत को विकसित करने में असमर्थ रहे। सेक्युलर, धर्म निरपेक्ष बनने के प्रयासों में हम नैतिक शिक्षा को शिक्षा के क्षेत्र से निष्कासित कर बैठे, ब्रह्म की सर्वव्यापी उपस्थिति को विस्मृत कर, न केवल उसकी उपेक्षा की वरन् उसकी राजनीति की जिसने हमारे राष्ट्रीय शिक्षा दर्शन को ही समाप्त कर दिया तथा शिक्षा दिशाहीन को आजीविका अर्जन का माध्यम बन गई, वह अपना मुक्तिदायी स्वरूप खो बैठी। इस प्रकार शिक्षा को संस्कार विहीन करके हमने नैतिक मूल्यों एवं संस्कारों पर स्वयं प्रहार किये। यह सभी स्थितियाँ इस तथ्य की प्रतिपादक है कि आज डॉ० बेसेन्ट के शिक्षा दर्शन के सिद्धांतों को आधार बनाकर अपना स्वतंत्र शिक्षा दर्शन एवं व्यवस्था का विकास करना हमारी आवश्यकता है तथा डॉ० बेसेन्ट के विचारों के अनुसार प्राचीन भारतीय शैक्षणिक व्यवस्थाओं को उज्जीवित कर उन्हें वर्तमान आवश्यकताअनुसार परिवर्द्धित, संशोधित एवं व्याख्यायित कर पुनर्स्थापित करना पुनीत कर्तव्य है। धर्म आधारित नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग हो– जिससे संगठन, शक्ति, संयम, सद्भाव, अनुशासन, बन्धुत्व की स्थापना हो सके। इस प्रकार डॉ० बेसेन्ट द्वारा भारतीय सिद्धांतों एवं शास्त्रों के आधार पर भारत की राष्ट्रीयता शिक्षा की नवीन एवं मौलिक रूपरेखा प्रस्तुत की गई जिसके द्वारा विकृतियों की समाप्ति, समस्याओं का समाधान एवं उन्मूलन संभव है तथा संभव है, छद्म धर्म निरपेक्षता की समाप्ति।

संदर्भ सूची :–

1. द बेसेन्ट स्पिरीट, वोल्यूम–2, अद्यार, 1939, पृ. 17।
2. वही, वोल्यूम–1, पृ. 43।
3. वही।
4. एनुअल रिपोर्ट ऑफ सी. एच. सी., 1904–05, पृ. 44।
5. द बेसेन्ट स्पिरीट, वोल्यूम–2, अद्यार, 1939, पृ. 54।

6. वही, वोल्यूम–1, पृ. 57।
7. वही।
8. द अवेकनिंग ऑफ इंडिया, पृ. 177–78।
9. द बेसेन्ट स्पिरीट, वोल्यूम–2, अद्यार, 1939, पृ. 63।
10. एजुकेशन एज द बेसिस ऑफ नेशनल लाइफ, पृ. 58।
11. छ नेशेसिटी ऑफ रिलिजियस एजुकेशन, पृ. 59।
12. द बेसेन्ट स्पिरीट, वोल्यूम–1, अद्यार, 1939, पृ. 105।
13. वही, वोल्यूम–2, पृ. 87।

♦♦♦♦♦